शिक्षक शिक्षा में भारतीय ज्ञान परम्परा का अनुप्रयोग

An Application of Indian Knowledge System in Teacher Education

—डॉ0 रत्नर्त्तुः मिश्रा

असिस्टेण्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्ष तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।।

भावी शिक्षकों से सम्बन्धित होने के कारण शिक्षकशिक्षा मूलतः भविष्य निर्माण का विषय है जिसका सम्बन्ध ज्ञान की संवृद्धि एवं ज्ञान के प्रसार से है। एक शिक्षक प्रशिक्षक द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा के संरक्षण एवं प्रसार हेतु द्वारा किया गया प्रयास वृहद् क्षेत्र को प्रभावित करेगा। शिक्षक प्रशिक्षक द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा के संरक्षण तथा प्रसार हेतु निम्न प्रयत्न किये जा सकते हैं–

- भारतीय ज्ञान परम्परा को केन्द्र में रखकर आधुनिक शैक्षणिक सम्प्रत्ययों का शिक्षण करना तथा इस कार्य हेतु छात्राध्यापकों को भी प्रेरित करना।
- विभिन्न विषयों हेतु भारतीय ज्ञान परम्परा आधारित शिक्षण–अधिगम–सामग्री, मुख्य रूप से स्वअधिगम सामग्री का निर्माण करना। यह विद्यार्थियों के वृहद् समूह हेतु उपयोगी होगा।
- छात्राध्यापकों को उनके मूल विषय के शिक्षण हेतु पाठ–योजना निर्माण के लिये भारतीय ज्ञान परम्परा आधारित उदाहरणों, कथानकों के प्रयोग हेतु निरन्तर प्रेरित करना।
- भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुकूल आचरण को व्यवहार में लाने का प्रयास करना जो कि विद्यार्थियों स्थायीरूप से प्रभावित करेगा।

चाण्डाल की गुरु के रूप में स्वीकृति

आचार्य शंकर और शिष्य त्रोटकाचार्य

मण्डन मिश्र के साथ शास्त्रार्थ में भारती मिश्र निर्णायिका के रूप में

भारतीय ज्ञान के महान स्तम्भ
आचार्य शंकर और उनका जीवन
की तीन प्रमुख घटनायें

आधुनिक शैक्षणिक सन्दर्भ में इन घटनाओं जीवन की प्रासंगिकता

- चण्डाल के साथ भेंट संकेत है मानसिक चिन्तन के रूढ़िमुक्त होने का, किसी व्यक्ति के वाह्य स्वरूप के आधार पर धारणा निर्माण न करने का, और संदेश है समतामूलक दृष्टिकोण का।
- त्रोटकाचार्य की कथा संकेत है कक्षाकक्ष में समावेशी चिन्तन का, शिक्षा में जनतन्त्र का।
- आचार्य शंकर और मण्डन मिश्र के मध्य शास्त्रार्थ हेतु निर्णायक के रूप में भारती मिश्र की स्वीकृति संदेश महिला समानता, महिला शिक्षा और लैंगिक भेद से मानसिक मुक्ति का।

ये कथायें संदेश देती हैं कि ज्ञान का उद्देश्य मात्र बुद्धिविलास नहीं अपितु ज्ञान एक गुण है जो कि जीवन में परिलक्षित होना चाहिये। ज्ञान समतामूलक, समावेशी चिन्तनयुक्त मस्तिष्क के निर्माण का साधन है जो उत्तम मनुष्य का आधारभूत लक्षण है और यही भारतीय ज्ञान परम्परा के सार्वभौमिक तथा सार्वकालिक होने का मूलकारण है।

धन्यवाद